प्रातः क्लास ओमशान्ति पिता श्री 22-5-68 मधुबन

ओमशान्ति। शिवभगवानुवाचः अपने शालीग्रामोंप्रति। शिव भगवानुवाच है तो जरूर शरीर होगा तब तो वाच्य होगा ना। वाच्य के लिए मुख जरूर चाहिए। तो जरूर सुनने वाले को भी कान चाहिए। आत्मा को मुख चाहिए। अभी तुम बच्चों को ईश्वरीय मत मिल रही है। जिसको हीराम मत कहा जाता है। दूसरी फिर है रावण मत। ईश्वरीय मत और आसुरी मत। ईश्वरीय मत आधा कल्प चलती है रावण मत भी आधा कल्प चलती है। अगर मनुष्य मत कहें वह भी तो आसुरी मत ही हुई। दैवी मत हुई ईश्वरीय मत। उनको राम सम्प्रदाय इनको रावण सम्प्रदाय कहा जाता है। बाप दैवी मत दे देवता बनाते हैं। आधा2 तो है ही। राम मत सतयुग त्रेता, जन्म भी थोड़े। क्योंकि योगी लोग हैं। और वह है रावण मत जन्म भी बहुत। क्योंकि भोगी लोग हैं। इसलिए आयु भी कम होती है। सम्प्रदाय बहुत हो जाते हैं। और बहुत दुःखी होते हैं। राम मत वाले भी फिर रावण मत से मिल जाते हैं। तो सारी दुनिया की रावण मत हो जाती है। फिर बाप आकर सभी को राम मत देते हैं। सतयुग में है राम मत। ईश्वरीय मत। उसको कहा जाता है स्वर्ग। ईश्वरीय मत मिलने से स्वर्ग की स्थापना हो जाती है। आधा कल्प के लिए। वह जब पूरी होती है तो फिर रावण राज्य होता है। उसको कहा जाता है आसुरी मत। अभी अपने से पूछो हम आसुरी मत से क्या करते थे, ईश्वरीयमत से क्या कर रहे हैं। आगे जैसे कि वेश्यालय में थेवा नर्कवासी थे। फिर अभी स्वर्ग वासी बनते हैं शिवालय में। सतयुग त्रेता को कहा जाता है शिवालय। जिस नाम से स्थापना होती है तो जरूर उनका नाम भी होगा ना। तो वह शिवालय जहां देवतायें रहते हैं सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी। रचयिताबाप ही तुमको यह बातें समझा रहे हैं। क्या रचना है वह भी तुम बच्चे समझते हो। सारी रचना इस समय उनको बुलाती है। हे पतित-पावन, वा हे लिबरेटर रावण के राज्य से छुड़ाने वाले दुःख से छुड़ाने वाले .... अभी तुम सुख का मालूम पड़ा है। तब ही इसको दुःख समझते हो। नहीं तो कई इनको दुःख थोड़े ही समझते हैं। जैसे बाप नालेजफुल है, मनुष्य सृष्टि का बीज रूप है, तुम भी नालेजफुल बनते हो। बीज में झाड़ की नालेज होती है ना। परन्तु वह है जड़। अगर चैतन्य होता तो बता देता। तुम चैतन्य झाड़ के हो। इसलिए झाड़ को भी जानते हो। बापको कहा ही जाता है मनुष्य सृष्टि का बीज रूप। सत-चित आनन्द स्वरूप। वह सत्य है चैतन्य है। वह झाड़ है जड़। यह है चैतन्य। इस झाड़ की उत्पति, पालना विनाश कैसे होता है यह भी कोई नहीं जानते। ऐसे नहीं नया झाड़ स्थापन होता है। यह कोई नहीं जानते। ऐसे नहीं नया झाड़ स्थापन होता है। यह भी बाप ने समझाया है। पुराने झाड़ वाले मुझे बुलाते हैं कि आकर लिबरेट करो रावण से। क्योंकि इस समय रावण राज्य है। मनुष्य कोई डिटेल को नहीं समझ सकते हैं। वह तो न रचयिता को न रचना को जानते हैं। ऋषि मुनि आद कोई भी नहीं जानते। बाप खुद बतला रहे हैं। मैं एक ही बार स्वर्ग बनाता हूं। स्वर्ग के बाद फिरनर्क बनता है। रावण के आने से वाममार्ग में चले जाते हैं। रामराज्य और रावण राज्य का अर्थ भी तुम ही समझाते हो। वह है पवित्र इसलिए आयु भी बड़ी होती है। हेल्थ वेल्थ हैपीनेस सभी है। तुम यहां आये हो बाप से वर्सा लेने। हेल्थ=हेल्थ वेल्थ हैपीनेस का। क्योंकि स्वर्गमें कब दुःख होता नहीं। तुम्हारे दिल में है हम कल्प2 इस पुरूषोत्तम संगम युग पर यह पुरूषार्थ करते हैं। नाम ही कैसा अच्छा है। और कोई युग को पुरूषोत्तम थोड़े ही कहा जाता है। उनमें तो सीढ़ी नीचे उतरते जाते हैं। बाप को बुलाते हैं भी हैं सिमरण भी करते रहते हैं। परन्तु यह मालूम नहीं रहता कि बाप कब आवेंगे। पुकारते तो हैं ओ गाड फादर। लिबरेट करो, गाईड करो। लिबरेटर बनेंगे तो जरूर आना पड़ेगा ना। फिर गाईड बन ले जाना पड़े। बच्चों को बहुत दिनों बाद देखते हैं। अच्छी रीति बच्चों को देख बड़ा खुश होते हैं। सभी तो एक जैसे नहीं हैं। वह है हद के बाप। यह है बेहद का बाप। बाबा ने समझाया है पुरूष क्रियेटर भी है। रचनारच उनकी पालना भी करते हैं। पुनर्जन्म तो लेना ही पड़ता है। किसको 10 किसको 12 बच्चे होते हैं। परन्तु वह सभी हैं हद के सुख। जिसके लिए ही काग बिष्टा समान समझते हैं

बिल्कुल तमोप्रधान बन जाते हैं। तमोप्रधान में सुख बहुत थोड़ा होता हैं। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने की युक्ति बाप बहुत ही सहज बताते हैं बाप को ही आलमाईटी अथॉटी कहाजाता है। मनुष्य समझते हैं गाड आलमाईटी अथॉर्टी है। तोवह जोचाहे सो कर सकते हैं। मरे हुये को जिन्दा कर सकते हैं। एक बार कोई ने लिखा अगर आप भगवान है तोमुझको जिन्दा कर दिखाओ। ऐसे2 ढेर पुरुष पूछते हैं। ईडियट लोग है ना। बाप समझाते हैं बन्दर सम्प्रदाय है। तुमको बाप ताकत देते हैं जिससे तुम रावण पर जीत पहनते हो। बन्दर से भी मंदिर लायक बनते हो। उन्हों ने फिर क्या2 बना दिया। वास्तव में तुम सभी सीतायें तुम सभी को रावण से छूड़ाया है। सभी रावण सम्प्रदाय है ना। रावण दवारा कब तुमको सुख नहीं मिल सकता। इस समय सभी रावण के जेल में है। राम के जेल में नहीं कहेंगे। राम आते ही हैं रावण के जेल से छूड़ाने। रावण 5 सीस वाला बनाते हैं। उनको 10 भुजायें दिखाते हैं। बाप ने समझाया है 5 स्त्री के 5 पुरुष के। एक एक में 5 विकार है ना। उनको कहते ही हैं रावण राज्य। वा 5 विकार रूपी माया का राज्य। ऐसे नहीं कहेंगे इनके पास बहुत माया है। माया का नशा चढ़ा हुआ है। बहुत धन को माया नहीं कहा जाता। धन को सम्पति कहा जाता है। तुम बच्चों को सम्पति आद बहुत मिलती हैं। तुमको कुछ मांगने की दरकार ही नहीं क्योंकि यह पढ़ाई है ना। पढ़ाई में मांगना होता है क्या। टीचर जो पढ़ावेंगे वह स्टुडन्ट पढ़ेंगे। जितना जो पढ़ेंगे। मांगने की बात ही नहीं। इसमें पवित्रता भी चाहिए। एक अक्षर की वैल्यु देखो कितनी हैं। पदमापदम। वह कौन सा अक्षर है। बापको पहचानो याद करो। बाप ने अपनी पहचान दी है। जैसे आत्मा बिन्दी है मैं भी सुप्रीम आत्मा हूं। हूं। वह तो स्वर पवित्र है। शान्ति का ज्ञान का पवित्रता का सागर हैं। एककी ही महिमा है। सभी का पोजीशन अपना2 हैं। ईश्वर सर्वव्यापी कहना इसको कहा जाता है अंधेर नगरी चौपट राजा ·· ·· ईश्वर थोड़े ही दुःख वा पुनर्जन्म लेते हैं। कोई फिर कहते 24 अवतार लेते हैं। मच्छ अवतार कछ अवतार परशुराम अवतार ·· है सभी फाल्टू। अभी तुमसमझते होशास्त्रों में क्या2 बातें लिख दी हैं। सर्वव्यापी सम्प्रदाय में है। फिर जंगली जनावरों में हैं, फिर पत्थर ठिक्कर मे है। नाटक भी बनाई है कण-कण जिन्हों नेनाटक देखा होगा वह जानते होंगे। महावीर बच्चे जो हैं उनको तो बाबा कहते हैं तुम भल कहीं भी जाओ। बायसकोप में जाओ। सिर्फसाक्षी हो देखना चाहिए क्या तमाशा करते हैं। अभी तुम बच्चे समझते हो सभी को रावण ने चोरी किया है जो भी भक्त हैं। अभी तुम रामराज्य की स्थापना कर रहे हो रावण को खत्म करदेते हो। यह है बेहद की बात। वह कहानी जो बनाई है। अभी बाप कहते हैं मैं तुमकोरावण राज्य से छूड़ाता हूं। तुम्हारी है शिव शक्ति सेना। शिव आलमाईटी है ना। शिव से शक्ति लेने वाले शिव की सेना तुम हो। यहां फिर आर्टीफिसीयल भी शिव सेना निकली है। अभी तुम्हारा नाम क्या रखें। तुम्हारा तो नाम है प्रजापिता ब्रहमा कुमार कुमारियां। शिव के तो सभी सन्तान हैं। सारी वर्ल्ड की आत्मायें उनकी सन्तान हैं। शिव से तुमको शक्ति मिलती है। तुम शिव से शक्ति लेने वाले हो। शिव बाबा तुमको ज्ञान सिखाते हैं जिससे इतनी बड़ी शक्ति मिलती हैं। जो आधा कल्प तुम सारे विश्व पर राज्य करते हो। तुम्हारा यह है योगबल की शक्ति। और उन्हों की है बाहूं बल की। भारत का प्राचीन राजयोग गाया हुआ है। उनका है बाहूंबल। चाहते हैं भारत का प्राचीन योग सीखने जिससे पैराडाईज़ स्थापन हुआ। कहते भी हैं क्राईस्टसे इतने वर्ष पहले पैराडाईज़ था। वह कैसे बना? योग से। तुम हो प्रवृति मार्ग वाले सन्यासी। वह तो घर-बार छोड़ विधवा आश्रम बना के जाते हैं जंगल में। वह कोई नई दुनिया में नहीं जाते हैं। जंगल में चले जाते हैं। उस समय सतोप्रधान होने कारण उनमें कशिश रहती हैं। जो फालोअर जाकर उनको वहांभोजनआद पहुंचाते हैं। पर बहुत जाकर रहते हैं। अभी नहीं रह सकते। यह तो तमोप्रधान बन गये हैं। जब सतोप्रधान थे थे। अभी तो तमोप्रधान होने कारण सभी यहां आ गये हैं। हरेक पहले सतोप्रधान होते हैं फिर तमो

ड्रामा अनुसार हरेक को अपना पार्ट मिला हुआ है। इतनी छोटी सी बिन्दी में कितना पार्ट है। इनको कुदरत ही कहेंगे। इतनी छोटी बिन्दी में 84 जन्मों का अविनाशी पार्ट भरा हुआ है। अभी आत्मा तो तमोप्रधान हो गई है। आयरन एज है ना। बाप तो एवर शक्तिवान गोल्डेन एजेड हैं। अभी तुम उन से शक्ति लेते हो। यह भी ड्रामा बना हुआ है। ऐसे नहीं कि हजारों सूर्यों से तेजोमय है। वह तो जिसको जो भाव बैठता है उसी भावना से देखते हैं भगवान हजार सूर्यों से तेजोमय है तो वह देखते हैं। आंखें लाल हो जाती हैं। बस करो हम सहन नहीं कर सकते हैं। बाप कहते हैं वह सभी भक्ति मार्ग के संस्कार हैं। यह तो नालेज है। इसमें तो पढ़ना है। बाप टीचर भी है पढ़ा रहे हैं। हमको कहते हैं तुमको तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। भक्ति मार्ग के लिए बाप ने समझाया है हियर नो ईवील.... मनुष्यों को तो पता नहीं है यह किसने कहा। असल में बन्दर का चित्र बनाते थे। जपान से आते थे। अभी तो मनुष्यों का बनाते रहते हैं। बाबा ने भी नलनी का बनाया था। भक्ति मार्ग की बातें बिल्कुल न सुनो। भक्तिमार्ग का मनुष्यों को नशा कितना है। भक्ति मार्ग का राज्य है ना। अभी होता है ज्ञान का राज्य। फर्क हो जाता है ना। भक्ति कल्ट और ज्ञान कल्ट। बच्चे समझते हैं बरोबर ज्ञान से सुख होता है। भक्ति से सीढ़ी नीचे ही उतरे हैं। हम पहले सतयुग में जाते हैं। फिर जूं मिशल आते2 नीचे उतरते हैं। 1250 वर्ष में दो कला कम हो जाती हैं। चन्द्रमा का भी मिशाल है ना। चंद्रमा को ग्रहण लगता है ना। कलाएं कम होती है फिर 16 कला हो जाता है। वह है अल्प काल की बात। यह तो बेहद की बात है। इस समय सभोपरराहू का ग्रहण है। ऊंच ते ऊंच है वह बृहस्पत की दशा। नीच में नीच है राहू की दशा। एकदम दिवाला कर देते हैं। वह बृहस्पत की दशा से हम चढ़ते हैं। बेहद की बात को जानते ही नहीं। अभी राहू की दशा तो सभी पर बरोबर है। यह तुम जानते हो। और कोई नहीं जानते। राहू की दशासे इनसालवेन्ट बनते हो। बृहस्पती की दशासे सालवेन्ट बनते हो। भारत कितना सालवेन्ट था। एक ही भारत था। सतयुग में रामराज्य पवित्र राज्य होता है। जिसकी महिमा अपवित्र राज्य वाले गाते हैं। मैं निर्गुण हारे में कोई गुण नाहीं। ऐसी संस्थाएं भी बनाते हैं। निर्गुण संस्था। अरे यह तो सारी दुनिया निर्गुण संस्था है। एक की बात थोड़े ही है। बच्चे को हमेशा महात्मा कहा जाता है। तुम फिर कहते हो कोई गुण नाहीं। यह तो सारी दुनिया है जिन में कोई गुण न होनक कारण राहू की दशा है। अभी बाप कहते हैं दे दान...अभी जाना तो सभी को है ना। देह के सभी धर्म को छोड़ अपन को आत्मा निश्चय करो। तुमको अभी वापस जाना है। पवित्र न होने कारण वापस कोई जा नहीं सकते। बाप अभी पवित्र होने की युक्ति बताते हैं। बेहद के बाप को याद करो। कई कहते हैं बाबा हम भूल जाते हैं। बाप कहते हैं मीठे बच्चों पतित-पावन बाप को भूल जावेंगे तो पावन कैसे बनेंगे। बिचार करो। यह क्या कहते हो। जनावर भी कब ऐसे नहीं कहे कि हम बाप को भूल जाते हैं। तुम क्या कहते हो। मैं तुम्हारा बेहद का बाप हूं ना। तुम आये हो बेहद का वर्सा लेने। निराकार बाप साकार में आवे तब तो पढ़ावे ना। अभी तुम जानते हो बाप ने इस में प्रवेश किया है। दो है बाप-दादा। दोनों की आत्मा भृकुटि के बीच है। और कर्म होंगे। कहते भी हैं बाप दादा तो जरूर दो आत्माएं होंगी। शिव बाबाऔर ब्रहमा की आत्मा। तुम सभी बने हो प्रजापिता ब्रहमा के कुमार-कुमारियां। तुमको नालेज मिल रही है। जानते हो हम भाई2हैं। फिर प्रजापिता ब्रहमा द्वारा हम बहन-भाई बनते हैं। यहयाद पक्की चाहिए। परन्तु बाबा देखते हैं बहनभाई में भी नाम रूप की कशिश होती है बहुतों को विकल्प आते हैं। अच्छा शरीरदेखकर विकल्प आते हैं ना। अभी बाप कहते हैं अपन को आत्मा भाई2 समझो। तो कुछ भी नहीं होगा। स्त्री कशिश करती है। उनका रूप भी ऐसा बना हुआ है। फिमेल को ही ब्युटी की प्राईज मिलती है। मेल को ब्युटी की प्राईज मिली ऐसा कबसुना? फिमेल कितना मोहित करती है। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझो। भाई2 देखो। आत्माएं सभी बदस हैं

ब्रदर्स है तो बाप जरूर चाहिए। सभी का बाप एक है। सभी बाप को याद करते हैं। अभी बाप कहते हैं सतोप्रधानबनना है तो मामेकं याद करो। जितना याद करेंगे तो कट निकलती जावेंगी। और खुशी का पारा चढ़ेगा। कशिश होती रहेंगी। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। सभी का फिचर्स अलग2 होते हैं। सारी दुनिया के जो भी मनुष्य मात्र हैं आत्मा भल एक जैसी है परन्तु फिचर्स सभी के अलग2 हैं। फिर वही रिपीट होगी। अपने2 समय पर। कितना बड़ा बेहद का ड्रामा है। सभी एक्टर्स हैं। जन्म व जन्म फिचर्स अलग होते हैं। एक न मिले दूसरे से। वह लोग कहते हैं अनेक दुनियां हैं। चन्द्रमा में भी दुनिय है। आगे तो वहां भी जमीन लेने लिए बोलते थे। अभी वह बन्द कर दिया है। उन्हों का है अशुध घमण्ड। अशुध घमण्ड वाले विनाश को प्राप्त होते हैं। तुम शुध घमण्ड वाले बाप से वर्सा लेते हो। आत्मा सेकण्ड में पार चली जाती है। आत्मा से तीखा और कुछ है नहीं। उन्हों के विमान आद तो उस पार जा नहीं सकते। वह तो नुकसान ही कर देंगे। एक स्टार गिर जाये तो कितना नुकसान हो जाये। यह तुम आगे चल कर देखेंगे। जो चीज़ दिव्य दृष्टि से तीखी जाती है वह फिर प्रेक्टीकल में देखेंगे। देवतायें स्वर्ग में होते हैं ना। वहां यह ज्ञान नहीं रहेंगा कि हमको फिर नर्क में जाना है। यह ज्ञान अभी तुमको है। वहां यह मालूम हो तो बादशाही की खुशी ही चली जाये। बाप बच्चों को समझाते हैं तुम्हारे दुःख के बहुत टाईम बहुत थोड़े ही दिन है। पिछाड़ी में थोड़ा समय दुःखों के पहाड़ गिरते हैं। खून की नदियां बहती है। हाय हाय होती है फिर होने की है जयजय कार। दुनिया नई बनेगी तो पुरानी दुनिया वाले हाय हाये करेंगे। पीछे फिर जयजयकार होंगी। हायहायकार कलियुग में। जयजयकार होते हैं सतयुग में। तुम बच्चे अभी रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त को जानते हो। यह भी समझते हो देवी गुण चाहिए। खान-पान की भी खबरदारी चाहिए। कहा जाता है सिगरेट छोड़ो तो बिमार हो जाते। फिर कहा जाता है इनकी तकदीर की भावी। बाप इसमें क्या करे। बाप टीचर सभी को तकदीर से एक जैसे ही बताते हैं। फिर जिसकी जो तकदीर। बाप तो सभी को समझाते हैं फिर हरेक के तकदीर पर है। कल्प पहले जिसकी जो तकदीर बनी होगी। यह सभीसमझने की बातें हैं। जिसकी जो सर्विस वा धंधा आद है भल वह भी करे। काम आद करते बाप को याद करे। भक्ति मार्ग में तो तुम अनेकों को याद करते थे। जो आया उनको याद किया। अभी बाप कहते हैं एक को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। शरीर को याद न करना है। वह है भूत की पूजा। भूत की याद आती है ना। 5तत्वों की पूजा करते हैं। पानी की पूजा, मछिर्यों की पूजा, करते हैं। चिड़ियों को भी खिलाते रहते हैं। कहेंगे चीज उनकोदो तो पालना होंगी, उसकी आर्शीबाद तुमको मिलेंगी। भक्ति मार्ग में अनेक प्रकार के रास्ते बताते हैं। बाप तो आते ही हैं यहां। रथ पर सवार होके आते हैं। रथ है यह। इन्हों ने फिरघोड़ेगाड़ी का रथ बना दिया है। कम से कम मोटर तो होनी चाहिए। यह बहुत ही समझने की बातें हैं। सिवाय बाप के और कोई क्वालिफीकेशन बदल नहीं सकते। वह तो अपने को असुर ही नहीं समझते तो देवता बनने का पुरुषार्थ भी कैसे करे। बाप कहते हैं तुम पूज्य देवता थे तो बड़े रायल थे। एमआबजेक्टके चित्र भी हैं। ऐसा कोई सतसंग नहीं जिसमें एमआबजेक्ट दिखाते हो। कुछ भी समझ नहीं सकते। यह भी बच्चों को समझाया तुम पढ़ाने वाली ब्राहमणियों से भी उंच पद पा सकते हो। हार्ट-फेल मत हो। ऐसे मत समझो हम देरी से आये हैं, टीचर से आगे कैसे जावेंगे। बाप कहते हैं टीचर से तुम उंच पद पा सकते हो। तुम भी टीचर बन सकते हो। अच्छी सर्विस कर सकते हो।

अच्छा रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का याद प्यारगुडमार्निंग और नमस्ते।